कृष्णा सोबती

जन्म : 1925 ।

जन्म-स्थान : गुजरात (पश्चिमी पंजाब जो अभी पाकिस्तान का हिस्सा है) ।

वृत्ति : स्वतंत्र लेखन ।

सांप्रतिक निवास: नई दिल्ली ।

सम्मान : साहित्य अकादमी सम्मान, हिंदी अकादमी का शलाका सम्मान, साहित्य अकादमी की महत्तर सदस्यता, बिहार का राजेंद्र शिखर सम्मान सहित अनेक राष्ट्रीय पुरस्कार ।

प्रमुख कृतियाँ : यारों के यार, जिंदगीनामा, दिलोदानिश, ऐ लड़की, समय सरगम (उपन्यास); डार से बिछुड़ी, मित्रो मरजानी, बादलों के घेरे, सूरजमुखी अँधेरे के (कहानी संग्रह); हम हशमत, शब्दों के आलोक में (शब्दचित्र, संस्मरण) ।

स्वतंत्रता के बाद के हिंदी कथा साहित्य में कृष्णा सोबती एक बड़े, समर्थ, कद्दावर रचनाकार का नाम है । कृष्णा एक महिला कथाकार हैं, किंतु उनका कथाकार-व्यक्तित्व महिला होने की किसी रियायत या खासियत पर जिंदा नहीं है । उनके कथा साहित्य की आधारभूत शक्ति, सामर्थ्य और वैशिष्ट्य उनके महिला होने पर मुनहसर नहीं, उसके स्रोत और जड़ें उनके विशाल जीवनानुभव, कल्पनाशील कथा प्रतिभा, भाषा-सामर्थ्य, कलात्मक अंतर्दृष्टि और मनस्वी बौद्धिकता में हैं । कृष्णा सोबती में अथक और अप्रतिहत नैतिक साहस तथा मानसिक स्वातंत्र्य की आध्यात्मिक शक्ति है । यह शक्ति-सामर्थ्य उनके लेखक को कभी पुराना नहीं पड़ने देती । नित्य नई ताजगी और उत्साह के साथ वे अपने पुराने-नए अनुभवों के भीतर से कोई सूत्र, कोई सिरा उठाकर एक अपूर्व कृति पेश कर देती हैं । प्रकृति, समाज, परिवेश और व्यक्तियों के साथ उनके संबंध नित नए हैं और इसी ताकत के सहारे वे समय के साथ हमकदम बनी रहती हैं । कृष्णा में परिवेश और मानवचरित्रों के अंतर्मन में पैठने तथा मानव संबंधों के नए-नए रूपों, भंगिमाओं को समझने, उनके मर्म को जज्ब करने की अद्‌भुत सामर्थ्य है । उन्होंने हिंदी कथा को कई अविस्मरणीय चरित्र दिए हैं ।

कृष्णा सोबती की कथा भाषा वैविध्यपूर्ण और बहुरूपा है । उसमें संस्कृत, उर्दू, पंजाबी और अन्य देशज विरासतों का ऐसा घोल है जो एक दिलचस्प रंगत लिए उभरता है । परिवेश, परिस्थिति और चरित्रों के मुताबिक वे अपनी भाषा को एक संयत और कलात्मक रूप देती हैं जिससे किताब से बाहर असली जिंदगी का आभास होता है ।

कृष्णा सोबती के पास भारत विभाजन का दर्दभरा निजी अनुभव है जिसे हम उनके कथा साहित्य में एक त्रासदी के रूप में उपस्थित पाते हैं, प्रत्यक्ष और परोक्ष दोनों ही रूपों में । कहना न होगा कि यह हमारी

राष्ट्रीय त्रासदी है जिसकी स्मृति लोक-मानस में अमिट है । यहाँ प्रस्तुत कहानी 'सिक्का बदल गया' भारत विभाजन की इसी पीड़ा भरी पृष्ठभूमि को लेकर लिखी गई है और हिंदी की एक प्रसिद्ध कहानी है । कहानी में विभाजित भारत के उस हिस्से (पाकिस्तान) की रहनेवाली शाहनी अपनी दुखभरी स्मृतियाँ, संबंध, खेत, हवेली और जैसे अपनी पूरी जिंदगी को छोड़ शरणार्थी होकर इस पार आती है, क्योंकि सिक्का बदल चुका है, मुल्क बँट गया है, निजाम बदल गया है । इस दारुण यथार्थ के आगे हिंदू और मुसलमान होना सचमुच कितना सतही और तुच्छ लगता है ! कहानी एकसाथ कई कोणों से सोचने और महसूस करने के लिए हमारे आगे बहुत कुछ रख देती है ।

◆ ◆ ◆

“ विभाजन जैसी ऐतिहासिक घटनाएँ जो संघर्ष के बाद किसी एक देश के विभाजन और नए देश के जन्म का कारण भी बनी हों, उनके राजनैतिक और सामाजिक विश्लेषण के बिना ही इकतरफा दोषारोपण करना – भोलापन ही होगा ।..... यह कहना कि यह दल अथवा वह दल, समुदाय, जाति, संप्रदाय ऐसा करने का गुनहगार है .....हिंसा, नरसंहार, आगजनी, मारकाट और राजनैतिक महत्वाकांक्षाओं में से लुप्त होते हुए सिर्फ एक समुदाय विशेष को अपराधी करार देना न राजनैतिक विश्लेषण होगा और न ही साहित्यिक अथवा ऐतिहासिक ।.. विभाजन ऐसे ऐतिहासिक विघटन की मानवीय स्मृति है जिसे भूलना नामुमकिन है और याद रखना खतरनाक ।

लिखते हुए मेरे लेखक की मन:स्थिति किसी भी हालत में अंदर और बाहर दोनों को भरसक समेटकर लिखने की होती है, लेखक के रूप में मैं रचना पर अपना एकछत्र अधिकार नहीं मानती । लेखक जैसे चाहे उससे खेले – पात्रों के खेल को अपनी मनचाही दिशा में मोड़े – यह 'वीटो' मैंने कभी इस्तेमाल नहीं की ।..... लिखते वक्त लेखक का ध्यान अपनी ओर नहीं, पात्रों पर, उभरते पाठ पर केंद्रित होता है । ”

(सोबती-वैद संवाद)
–कृष्णा सोबती

सिक्का बदल गया

खद्दर की चादर ओढ़े, हाथ में माला लिए शाहनी जब दरिया के किनारे पहुँची तो पौ फट रही थी। आसमान के परदे पर लालिमा फैलती जा रही थी । शाहनी ने कपड़े उतारकर एक ओर रखे और ''श्री राम, श्री राम'' करती पानी में हो ली । अंजलि भरकर सूर्य देवता को नमस्कार किया, अपनी उनींदी आँखों पर छींटे दिए और पानी से लिपट गई ।

चनाब का पानी आज भी पहले-सा ही सर्द था, लहरें लहरों को चूम रही थीं । दूर काश्मीर की पहाड़ियों से बर्फ पिघल रही थी । उछल-उछल आते पानी के भंवरों से टकराकर कगारे गिर रहे थे, लेकिन दूर-दूर तक बिछी रेत आज न जाने क्यों खामोश लगती थी । शाहनी ने कपड़े पहने, इधर-उधर देखा, कहीं किसी की परछाईं तक न थी । पर नीचे रेत में अगणित पाँवों के निशान थे । वह कुछ सहम-सी उठी ।

आज इस प्रभात की मीठी नीरवता में न जाने क्यों कुछ भयावना-सा लग रहा है । वह पिछले पचास वर्षों से यहाँ नहाती आ रही है । कितना लंबा अरसा है । शाहनी सोचती है, एक दिन इसी दरिया के किनारे वह दुलहन बन कर उतरी थी । और आज.....आज शाहजी नहीं, उसका वह पढ़ा-लिखा लड़का नहीं, आज वह अकेली है, शाहजी की लंबी-चौड़ी हवेली में अकेली है । पर नहीं.....यह क्या सोच रही है वह सवेरे-सवेरे । अभी भी दुनियादारी से मन नहीं फिरा उसका । शाहनी ने लंबी साँस ली और ''श्री राम, श्री राम'' करती बाजरे के खेतों से होती घर की राह ली । कहीं-कहीं लिपे-पुते आँगनों से धुआँ उठ रहा था। टन....टन-बैलों की घंटियाँ बज उठती हैं । फिर भी.....कुछ बँधा-बँधा-सा लग रहा है । 'जम्मीवाला' कुआँ भी आज नहीं चल रहा । ये शाहजी की ही असामियाँ हैं । शाहनी ने नजर उठाई । यह मीलों फैले खेत अपने ही हैं । भरी-भराई नई फसल को देखकर शाहनी किसी अपनत्व के मोह में भीग गई । यह सब शाहजी की बरकतें हैं । दूर-दूर गाँवों तक फैली हुई जमीनें, जमीनों में कुएँ-सब अपने हैं। साल में तीन फसल, जमीन तो सोना उगलती है । शाहनी कुएँ की ओर बढ़ी, आवाज दी, ''शेरे, शेरे, हसैना हसैना....।''

शेरा शाहनी का स्वर पहचानता है । वह न पहचानेगा ? अपनी माँ जैना के मरने के बाद वह शाहनी के पास ही पलकर बड़ा हुआ । अपने पास पड़ा गड़ासा 'शटाले' के ढेर के नीचे सरका दिया । हाथ में हुक्का पकड़कर बोला – ''ऐहे-सैना-सैना.....।'' शाहनी की आवाज उसे कैसे

हिला गई है । अभी तो वह सोच रहा था कि उस शाहनी की ऊँची हवेली की अँधेरी कोठरी में पड़ी सोने-चांदी की संदूकचियाँ उठाकर.....कि तभी ''शेरे शेरे.....।'' शेरा गुस्से से भर गया। किस पर निकाले अपना क्रोध ? शाहनी पर । चीखकर बोला – ''ऐ मर गई एं.....रब्ब तैनू मौत दे.....''

हसैना आटे वाली कनाली एक ओर रख, जल्दी-जल्दी बाहर निकल आई । ''ऐ आई यां-क्यों छावेले (सुबह-सुबह) तड़पना एं ?''

अब तक शाहनी नजदीक पहुँच चुकी थी । शेरे की तेजी सुन चुकी थी । प्यार से बोली, ''हसैना, यह वक्त लड़ने का है ? वह पागल है तो तू ही जिगरा कर लिया कर ।''

''जिगरा ।'' हसैना ने मान भरे स्वर में कहा –''शाहनी, लड़का आखिर लड़का ही है । कभी शेरे से पूछा है कि मुँह अँधेरे ही क्यों गालियाँ बरसाई हैं इसने ?'' शाहनी ने लाड़ से हसैना की पीठ पर हाथ फेरा, हँसकर बोली – ''पगली मुझे तो लड़के से बहू प्यारी है । शेरे....''

''हाँ शेरनी ।''

''मालूम होता है, रात को कुल्लूवाल के लोग आए हैं यहाँ ?'' शाहनी ने गंभीर स्वर में कहा ।

शेरे ने जरा रुककर, घबराकर कहा – ''नहीं-शाहनी.....'' शेरे के उत्तर की अनसुनी कर शाहनी जरा चिंतित स्वर में बोली, ''जो कुछ भी हो रहा है, अच्छा नहीं । शेरे, आज शाहजी होते तो शायद कुछ बीच-बचाव करते । पर....'' शाहनी कहते-कहते रुक गई । आज क्या हो रहा है। शाहनी को लगा जैसे जी भर-भर आ रहा है । शाहजी को बिछुड़े कई साल बीत गए, पर–पर आज कुछ पिघल रहा है–शायद पिछली स्मृतियाँ....आँसुओं को रोकने के प्रयत्न में उसने हसैना की ओर देखा और हल्के से हँस पड़ी । और शेरा सोच ही रहा है, क्या कह रही है शाहनी आज। आज शाहजी क्या, कोई भी कुछ नहीं कर सकता । यह होकर रहेगा–क्यों न हो? हमारे ही भाई-बंदों से सूद ले-लेकर शाहजी सोने की बोरियाँ तोला करते थे। प्रतिहिंसा की आग शेरे की आँखों में उतर आई । गड़ासे की याद हो आई । शाहनी की ओर देखा–नहीं-नहीं, शेरा इन पिछले दिनों में तीस-चालीस कत्ल कर चुका है । पर–पर वह ऐसा नीच नहीं.....सामने बैठी शाहनी नहीं, शाहनी के हाथ उसकी आंखों में तैर गए । वह सर्दियों की रातें–कभी-कभी शाहजी की डाँट खाकर वह हवेली में पड़ा रहता था । और फिर लालटेन की रोशनी में वह देखता है, शाहनी के ममता भरे हाथ दूध का कटोरा थामे हुए–''शेरे-शेरे, उठ, पी ले ।'' शेरे ने शाहनी के झुर्रियाँ पड़े मुँह की ओर देखा तो शाहनी धीरे-धीरे मुस्करा रही थी । शेरा विचलित हो गया। आखिर शाहनी ने क्या बिगाड़ा है हमारा ? शाहजी की बात शाहजी के साथ गई, वह शाहनी को जरूर बचाएगा। लेकिन कल रात वाला मशवरा । वह कैसे मान गया था फिरोज की बात । ''सब कुछ ठीक हो जाएगा–सामान बाँट लिया जाएगा ।''

''शाहनी चलो तुम्हें घर तक छोड़ आऊँ ।''

शाहनी उठ खड़ी हुई । किसी गहरी सोच में चलती हुई शाहनी के पीछे-पीछे मजबूत कदम उठाता शेरा चल रहा है । शंकित-सा इधर-उधर देखता जा रहा है । अपने साथियों की बातें उसके कानों में गूँज रही हैं । पर क्या होगा शाहनी को मारकर ?

''शाहनी ।''

''हाँ शेरे ।''

शेरा चाहता है कि सिर पर आने वाले खतरे की बात कुछ तो शाहनी को बता दे, मगर वह कैसे कहे ?''

''शाहनी....''

शाहनी ने सिर ऊँचा किया । आसमान धुएँ से भर गया था । ''शेरे.....'' शेरा जानता है यह आग है । जबलपुर में आज आग लगनी थी, लग गई । शाहनी कुछ न कह सकी । उसके नाते-रिश्ते सब वहीं हैं....

हवेली आ गई । शाहनी ने शून्य मन से ड्योढ़ी में कदम रखा । शेरा कब लौट गया उसे कुछ पता नहीं । दुर्बल-सी देह और अकेली, बिना किसी सहारे के । न जाने कब तक वहीं पड़ी रही शाहनी । दुपहर आई और चली गई । हवेली खुली पड़ी है । आज शाहनी नहीं उठ पा रही । जैसे उसका अधिकार आज स्वयं ही उससे छूट रहा है । शाहजी के घर की मालकिन..... लेकिन नहीं, आज मोह नहीं हट रहा । मानो पत्थर हो गई हो । पड़े-पड़े साँझ हो गई, पर उठने की बात फिर भी नहीं सोच पा रही । अचानक रसूली की आवाज सुनकर चौंक उठी ।

''शाहनी-शाहनी, सुनो ट्रकें आती हैं लेने ?'' ''ट्रकें.....?'' शाहनी इसके सिवाय और कुछ न कह सकी । हाथों ने एक-दूसरे को थाम लिया । बात की बात में खबर गाँव भर में फैल गई । बीबी ने अपने विकृत कंठ से कहा - ''शाहनी, आज तक ऐसा न हुआ, न कभी सुना गजब हो गया, अंधेर पड़ गया ।''

शाहनी मूर्तिवत वहीं खड़ी रही । नवाब बीबी ने स्नेह-सनी उदासी से कहा-''शाहनी, हमने तो कभी न सोचा था ।''

शाहनी क्या कहे कि उसी ने ऐसा कब सोचा था । नीचे से पटवारी बेगू और जैलदार की बातचीत सुनाई दी । शाहनी समझी कि वक्त आन पहुँचा । मशीन की तरह नीचे उतरी, पर ड्योढ़ी न लाँघ सकी । किसी गहरी, बहुत गहरी आवाज से पूछा -''कौन ? कौन है वहाँ ?''

कौन नहीं है आज वहाँ ? सारा गाँव है, जो उसके इशारे पर नाचता था कभी । उसकी असामियाँ हैं जिन्हें उसने अपने नाते-रिश्तों से कभी कम नहीं समझा । लेकिन नहीं, आज उसका कोई नहीं, आज वह अकेली है । यह भीड़ की भीड़, उनमें कुल्लूवाल के जाट । वह क्या सुबह ही न समझ गई थी ?

बेगू पटवारी और मसीत के मुल्ला इस्माइल ने जाने क्या सोचा । शाहनी के निकट आ खड़े हुए । बेगू आज शाहनी की ओर देख नहीं पा रहा । धीरे-से जरा गला साफ करते हुए कहा

–''ाहनी, रब्ब नू एही मंजूर सी ।''

शाहनी के कदम डोल गए । चक्कर आया और दीवार के साथ लग गई । इसी दिन के लिए छोड़ गए थे शाहजी उसे ? बेजान-सी शाहनी की ओर देख कर बेगू सोच रहा है –''क्या गुजर रही है शाहनी पर। मगर क्या हो सकता है । सिक्का बदल गया है.....''

शाहनी का घर से निकलना छोटी-सी बात नहीं । गाँव-का-गाँव खड़ा है हवेली के दरवाजे से लेकर उस दारे तक जिसे शाहजी ने अपने पुत्र की शादी में बनवा दिया था । तब से लेकर आज तक सब फैसले, सब मशविरे यहीं होते रहे हैं । इस बड़ी हवेली को लूट लेने की बात भी यहीं सोची गई थी । यह नहीं कि शाहनी कुछ न जानती हो । वह जानकर भी अनजान बनी रही । उसने कभी बैर नहीं जाना । किसी का बुरा नहीं किया । लेकिन बूढ़ी शाहनी यह नहीं जानती कि सिक्का बदल गया है.....

देर हो रही थी । थानेदार दाऊद खाँ जरा अकड़कर आगे आया और ड्योढ़ी पर खड़ी जड़ निर्जीव छाया को देखकर ठिठक गया । वही शाहनी है जिसके शाहजी उसके लिए दरिया के किनारे खेमे लगवा दिया करते थे । यह तो वही शाहनी है जिसने उसकी मंगेतर को सोने के कनफूल दिए थे मुँह दिखाई में । अभी उसी दिन जब वह 'लीग' के सिलसिले में आया था तो उसने उद्दंडता से कहा था –''शाहनी, भागोवाल मसीत बनेगी, तीन सौ रुपए देने पड़ेंगे ।'' शाहनी ने अपने उसी सरल स्वभाव से तीन सौ रुपए आगे रख दिए थे। और आज.....?

–''शाहनी ।'' दाऊद खाँ ने आवाज दी ! वह थानेदार है, नहीं तो उसका स्वर शायद आँखों में उतर आता ।

शाहनी गुमसुम, कुछ न बोल पाई ।

''शाहनी ।'' ड्योढ़ी के निकट जाकर बोला –''देर हो रही है शाहनी । (धीरे-से) कुछ साथ रखना हो तो रख लो । कुछ साथ बाँध लिया है ? सोना-चांदी ....''

शाहनी अस्फुट स्वर में बोली –''सोना-चांदी ?'' जरा ठहर कर सादगी से कहा –''सोना-चांदी ! बच्चा वह सब तुम लोगों के लिए है । मेरा सोना तो एक-एक जमीन में बिछा है ।''

दाऊद खाँ लज्जित-सा हो गया । ''शाहनी तुम अकेली हो, अपने पास कुछ होना जरूरी है । कुछ नकदी ही रख लो । वक्त का कुछ पता नहीं.....''.

''वक्त ?'' शाहनी अपनी गीली आँखों से हँस पड़ी । ''दाऊद खाँ, इससे अच्छा वक्त देखने के लिए क्या मैं जिंदा रहूँगी ।'' किसी गहरी वेदना और तिरस्कार से कह दिया शाहनी ने।

दाऊद खाँ निरुत्तर है । साहस कर बोला –''शाहनी, कुछ नकदी जरूरी है ।''

''नहीं बच्चा, मुझे इस घर से''-शाहनी का गला रुँध गया-''नकदी प्यारी नहीं । यहाँ की नकदी यहीं रहेगी ।''

शेरा आन खड़ा हुआ पास । दूर खड़े-खड़े उसने दाऊद खाँ को शाहनी के पास देखा तो शक गुजरा कि हो-न-हो कुछ मार रहा है शाहनी से । ''खाँ साहिब देर हो रही है ।''

शाहनी चौंक पड़ी । देर–मेरे घर में मुझे देर । आँसुओं की भँवर में न जाने कहाँ से विद्रोह उमड़ पड़ा । मैं पुरखों के इस बड़े घर की रानी और यह मेरे ही अन्न पर पले हुए..... नहीं, यह सब कुछ नहीं । ठीक है–देर हो रही है । शाहनी के जैसे कानों में यही गूँज रहा है–देर हो रही है–पर नहीं, शाहनी रो-रोकर नहीं, शान से निकलेगी इस पुरखों के घर से, मान से लाँघेगी यह देहरी, जिस पर एक दिन वह रानी बनकर आ खड़ी हुई थी । अपने लड़खड़ाते कदमों को संभालकर शाहनी ने दुपट्टे से आँखें पोंछी और ड्योढ़ी से बाहर हो गई । बड़ी-बूढ़ियाँ रो पड़ीं । उनके सुख-दुख की साथिन आज इस घर से निकल पड़ी है । किसकी तुलना हो सकती थी इसके साथ । खुदा ने सब कुछ दिया था, मगर–मगर दिन बदले, वक्त बदले.....

शाहनी ने दुपट्टे से सिर ढाँपकर अपनी धुँधली आँखों में से हवेली को अंतिम बार देखा । शाहजी के मरने के बाद भी जिस कुल की अमानत को उसने सहेजकर रखा, आज वह उसे धोखा दे गई । शाहनी ने दोनों हाथ जोड़ लिए–यही अंतिम दर्शन था, यही अंतिम प्रणाम था । शाहनी की आँखें फिर कभी इस ऊँची हवेली को न देख पाएँगी । प्यार ने जोर मारा–सोचा, एक बार फिर घूम-फिर कर पूरा घर क्यों न देख आई मैं ? जी छोटा हो रहा है, पर जिनके सामने हमेशा बड़ी बनी रही है उनके सामने वह छोटी न होगी । इतना ही ठीक है । बस हो चुका । सिर झुकाया । ड्योढ़ी के आगे कुलवधू की आँखों से निकलकर कुछ बूँदें चू पड़ीं । शाहनी चल दी–ऊँचा-सा भवन पीछे खड़ा रह गया । दाऊद खाँ, शेरा, पटवारी, जैलदार, और छोटे-बड़े, बच्चे, बूढ़े मर्द-औरतें सब पीछे-पीछे https://www.evidyarthi.in/

ट्रकें अब तक भर चुकी थीं । शाहनी अपने को खींच रही थी । गाँव वालों के गलों में जैसे धुआँ उठ रहा है । शेरे, खूनी शेरे का दिल टूट रहा है । दाऊद खाँ ने आगे बढ़कर ट्रक का दरवाजा खोला । शाहनी बढ़ी । इस्माइल ने आगे बढ़कर भारी आवाज से कहा–''शाहनी, कुछ कह जाओ । तुम्हारे मुँह से निकली सीस झूठी नहीं हो सकती ।'' और अपने साफे से आँखों का पानी पोंछ लिया । शाहनी ने उठती हुई हिचकी को रोककर रुँधे-रुँधे गले से कहा, ''रब्ब तुहानू सलामत रक्खे बच्चा, खुशियाँ बक्शे.....।''

वह छोटा-सा जन-समूह रो दिया । जरा भी दिल में मैल नहीं शाहनी के । और हम–हम शाहनी को नहीं रख सके । शेरे ने बढ़कर शाहनी के पाँव छुए । ''शाहनी, कोई कुछ नहीं कर सका । राज भी पलट गया....'' शाहनी ने काँपता हुआ हाथ शेरे के सिर पर रखा और रुक-रुककर कहा–''तैनू भाग जगण चन्ना'' (ओ चाँद तेरे भाग जागें) । दाऊंद खाँ ने हाथ का संकेत किया । कुछ बड़ी-बूढ़ियाँ शाहनी के गले लगीं और ट्रक चल पड़ी ।

अन्न-जल उठ गया । वह हवेली, नई बैठक, ऊँचा चौबारा, बड़ा 'पसार' एक-एक करके घूम रहे हैं शाहनी की आँखों में । कुछ पता नहीं–ट्रक चल पड़ी है या वह स्वयं चल रही है । आँखें बरस रही हैं । दाऊद खाँ विचलित होकर देख रहा है इस बूढ़ी शाहनी को । कहाँ जाएगी अब वह ?

''शाहनी मन में मैल न लाना । कुछ कर सकते तो उठा न रखते । वक्त ही ऐसा है । राज पलट गया है..... सिक्का क्या बदलेगा ? वह तो मैं वहीं छोड़ आई ।.....?

और शाहजी की शाहनी की आँखें और भी गीली हो गईं ।

आस-पास के हरे-हरे खेतों से घिरे गाँवों में रात खून बरसा रही थी ।

शायद राज पलटा भी खा रहा था और – सिक्का बदल रहा था.....

❑❑❑

अभ्यास

पाठ के साथ

1. शाहनी के मन में किस बात की पीड़ा है, फिर भी वह शेरा और हसैना के समक्ष हल्के से हँस पड़ती है । क्यों ?
2. शेरा कौन है और उसके साथ शाहनी का क्या संबंध है ?
3. शेरा के भीतर प्रतिहिंसा की आग क्यों है ?
4. शाहनी अपना घर छोड़ते हुए भी विरोध में एक स्वर नहीं निकाल पाती । ऐसा क्यों ?
5. शाहनी के हाथ शेरा की आँखों में क्यों तैर गए ?
6. शेरा की फिरोज के साथ क्या बात हुई थी ?
7. जबलपुर में आग क्यों लगाई गई थी ? धुआँ देख शाहनी क्यों चिंतित हो गई थी ?
8. दाऊद खाँ की कैसी स्मृतियाँ शाहनी से जुड़ी हुई हैं ?
9. भागोचाल मसीत के लिए शाहनी ने दाऊद खाँ को क्या दिया था ?
10. थानेदार दाऊद खाँ बार-बार शाहनी से नकद रखने का आग्रह करता है । तब भी शाहनी नकद नहीं रखती है । क्यों ?
11. दाऊद खाँ क्यों चाहता है कि शाहनी हवेली छोड़ते हुए कुछ साथ रख ले ।
12. दाऊद खाँ को शाहनी के पास खड़े देखकर शेरा ने क्यों कहा–''खाँ साहिब देर हो रही है ।''
13. शाहनी किसके सुख-दुख की साथिन थी ?
14. चलते समय इस्माइल ने शाहनी से क्या कहा ?
15. खूनी शेरे का दिल क्यों टूट रहा था ?
16. शाहनी शेरे को क्या आशीर्वाद देती है ?
17. शाहनी के जाने पर लोगों के मन में क्या अफसोस होता है ?

18. 'शाहनी चौंक पड़ी । देर – मेरे घर में मुझे देर । आँसुओं की भँवर में न जाने कहाँ से विद्रोह उमड़ पड़ा ।'–इस उद्धरण की सप्रसंग व्याख्या करें ।
19. घर छोड़ते समय शाहनी की मनोदशा का वर्णन अपने शब्दों में करें ।
20. निम्नलिखित वाक्यों की सप्रसंग व्याख्या करें –
    (क) जी छोटा हो रहा है, पर जिनके सामने हमेशा बनी रही है उनके सामने वह छोटी न होगी ।
    (ख) आस-पास के हरे-हरे खेतों में से घिरे गाँवों में रात खून बरसा रही थी ।
8. प्रस्तुत कहानी का शीर्षक 'सिक्का बदल गया' कहाँ तक सार्थक है । अपना मत दें ।

पाठ के आस-पास

1. यह कहानी भारत-पाक विभाजन की पृष्ठभूमि पर लिखी गई है । इसी पृष्ठभूमि पर हिंदी के कई कथाकारों जैसे - अज्ञेय, मोहन राकेश, भीष्म साहनी आदि ने कई कहानियाँ लिखी हैं । अपने शिक्षक की सहायता से उन कहानियों को उपलब्ध करें और उन कहानियों के कथ्य पर चर्चा करें ।
2. कहानी में चनाब नदी का उल्लेख है । अब यह नदी पाकिस्तान में है । इस नदी के उद्गम एवं प्रवाह क्षेत्र की जानकारी अपने शिक्षक से प्राप्त करें ।
3. यह कहानी लेखिका के बड़े उपन्यास 'जिंदगीनामा' का बीज रूप है । वहाँ भी यही शाहनी नायिका के रूप में उपस्थित है । पृष्ठभूमि भी एक ही है और समस्या भी बड़े फलक पर एक-सी है । जिंदगीनामा विद्यालय के पुस्तकालय से लेकर पढ़ें ।
4. भारत-पाक विभाजन की त्रासदी के केंद्र में रखकर भीष्म साहनी ने 'तमस' नाम का उपन्यास लिखा था और मनोहर श्याम जोशी ने 'बुनियाद' धारावाहिक । तमस पर भी धारावाहिक बना था । आप दोनों धारावाहिकों के कैसेट मँगाकर देखें और अपने शिक्षक से चर्चा करें ।

भाषा की बात

1. इस कहानी में पंजाबी भाषा के कई वाक्य हैं । उन्हें हिंदी में अनूदित करें ।
2. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची लिखें –
   दरिया, आसमान, सूर्य, आँख, पानी, सोना, पुत्र, घर
3. निम्नलिखित शब्दों के बहुवचन बनाइए –
   दुलहन
   नजर
   हवेली
   कोठरी
   साथी
   आँसू
   देवता
4. 'पर–पर वह ऐसा नीच नहीं–सामने बैठी शाहनी नहीं, शाहनी के हाथ उसकी आँखों में तैर गए ।' यहाँ 'आँखों में तैर गए' का क्या अर्थ है ?

5. 'शाहनी, आज तक ऐसा न हुआ, न कभी सुना, गजब हो गया, अंधेर पड़ गया । यहाँ 'अंधेर पड़ गया' मुहावरा है । मुहावरे के प्रयोग के बिना इसी वाक्य को इस प्रकार लिखें कि अर्थ परिवर्तित न हो ।
6. 'जमीन तो सोना उगलती है ।' यहाँ सोना उगलने से क्या तात्पर्य है ?
7. सलामत एक भाववाचक संज्ञा है । इसका विशेषण रूप हुआ सलीम । ऐसे ही नीचे के शब्दों के विशेषण रूप लिखें –

   महारत, रहमत, तिजारत, शराफत, शरारत

शब्द निधि :

खद्दर	:	खादी
दरिया	:	नदी
अंजलि	:	दोनों हथेलियों को मिलाकर बनाया हुआ गड्ढा
अगणित	:	जिसकी गिनती न की जा सके
नीरवता	:	शांति
असामियाँ	:	वह जिसने लगान पर जोतने के लिए खेत लिया हो
शटाले	:	फसल की डंठलों का पूला
ड्योढ़ी	:	दरवाजा
खेमे	:	शिविर
मसीत	:	मस्जिद
कगारे	:	किनारे
जिगरा	:	कलेजा, उदारता
दारे	:	द्वार
लीग	:	मुस्लिम लीग के संदर्भ में
सीस	:	आशीर्वाद, आशीष
पसार	:	घर के आगे का मैदान, अहाता
साफा	:	पगड़ी जिसकी छोर लटक रही हो
बरकत	:	वृद्धि
सलामत	:	सुरक्षित